डा. एस. रामानुजम

निदेशक (अगस्त, 1949 से सितम्बर, 1951 तथा सितम्बर, 1952 से मई, 1956 तक)

(आपने भारत में आलू अनुसंधान के लिए, बीज उत्पादन एवं प्रजातीय विकास सहित उत्पादन तकनीक की नींव रखी)।

जन्म एवं शिक्षा

डा. श्रीनिवासा रामानुजम का जन्म 2 अक्तूबर, 1903 में सलेम के निकट वानावसी (तमिलनाडू) में हुआ था। आपने अपनी प्रारम्भिक स्कूली शिक्षा सलेम एवं मद्रास से प्राप्त की थी। सन् 1925 में आपने वनस्पति विज्ञान एवं भूविज्ञान में आनर्स डिग्री प्राप्त की तथा सन् 1927 में मद्रास विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। सन् 1935 में आपने किंग्स कॉलिज लंदन में प्रवेश किया तथा सन् 1937 में लंदन विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की।

व्यावसायिक उपलब्धियां

डा. रामानुजम ने अपने व्यावसायिक कैरियर की शुरूआत अनुसंधान सहायक, धान विशेषज्ञ के रूप में कोयम्बतूर से की थी। सन् 1938 से 1946 तक, आपने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में द्वितीय आर्थिक वनस्पति विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया। सन् 1946-1956 तक (एक वर्ष को छोड़कर) केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, पटना में वह निदेशक के पद पर कार्यरत रहे। उसके बाद आपने अनुसंधान निदेशक, कृषि विभाग, बिहार सरकार में कार्यभार ग्रहण कर सन् 1966 तक राज्य के समस्त कृषि अनुसंधान पहलुओं को संगठित एवं निर्देशित किया। सेवानिवृत्ति के पश्चात्, वह बेंगलूर में जाकर बस गये। यहां तक कि डा. रामानुजम की सेवानिवृत्ति के बाद भी उनकी विशेषज्ञता की बहुत बाद में भी मांग की जाती रही थी तथा वे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, आई.एन.एस.ए, बिहार सरकार तथा कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बेंगलूर की अनेक विशेषज्ञ समितियों से निरन्तर जुड़े रहे। डा. रामानुजम् का 9 जून, 1979 में बेंगलूर में उनका निधन हो गया।

सम्मान

डा. रामानुजम विज्ञान की प्रगति के लिए ग्रेट ब्रिटेन की जैनेटीकल सोसायटी तथा ब्रिटिश ऐसोसिऐशन के सदस्य थे। वे सन् 1948 में भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अध्येता बने। सन् 1952 में वह भारतीय विज्ञान कांग्रेस के वनस्पति अनुभाग के अध्यक्ष चुने गये। वह भारतीय आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन सोसायटी के संस्थापक सदस्य थे जिसके वह आगामी वर्षो में सचिव एवं अध्यक्ष भी रहे।